14 पीपल

प्रकृति चित्रण छायावादी कविता की उल्लेखनीय विशेषता है। यह कविता प्रकृति के विविध रूपों से हमारा आत्मीय परिचय कराती है। कविता के केन्द्र में प्राचीन पीपल वृक्ष है जो अनेक बदलावों का साक्षी है। पीपल वृक्ष के समक्ष विभिन्न प्रकार के पेड़, झरने, नदी, चिड़िया, ऋतुएँ, दिवस चक्र सक्रिय हैं। कहना न होगा कि यह कविता अनेक दृष्टियों से उल्लेखनीय है।

कानन का यह तरुवर पीपल
युग-युग से जग में अचल, अटल
ऊपर विस्तृत नभ नील-नील नीचे वसुधा में नदी, झील
जामुन, तमाल, इमली, करील
जल से ऊपर उठता मृणाल फुनगी पर खिलता कमल लाल
तिर-तिर करते क्रीड़ा मराल
ऊँचे टीले से वसुधा पर झरती है निर्झरिणी झर-झर
हो जाती बूँद-बूँद झर कर

निर्झर के पास खड़ा पीपल सुनता रहता कलकल-छलछल
पल्लव हिलते ढलढल-ढलढल
पीपल के पत्ते गोल-गोल
कुछ कहते रहते डोल-डोल
जब-जब आता पंछी तरु पर जब-जब आता पंछी उड़कर
जब-जब खाता फल चुन-चुनकर
पड़ती जब पावस की फुहार बजते जब पंछी के सितार
बहने लगती शीतल बयार

तब-तब कोमल पल्लव हिल-डुल गाते सर्सर, मर्मर मंजुल
लख-लख, सुन-सुन विह्वल बुलबुल
बुलबुल गाती रहती चह-चह सरिता गाती रहती बह-बह
पत्ते हिलते रहते रह-रह
जितने भी हैं इसमें कोटर
सब पंछी, गिलहरियों के घर
सन्ध्या को अब दिन जाता ढल सूरज चलते हैं अस्ताचल
कर में समेट किरणें उज्ज्वल

हो जाता है सुनसान लोक चल पड़ते घर को चील, कोक
अँधियाली संध्या को विलोक

P31V7Q

भर जाता है कोटर-कोटर बस जाते हैं पत्तों के घर
घर-घर में आती नींद उतर
निद्रा ही में होता प्रभात, कट जाती है इस तरह रात
फिर वही बात रे वही बात
इस वसुधा का यह वन्य प्रान्त
है दूर, अलग, एकान्त, शान्त

है खड़े जहाँ पर शाल, बाँस, चौपाये चरते नरम घास
निर्झर, सरिता के आस-पास
रजनी भर रो-रोकर चकोर कर देता है रे रोज भोर
नाचा करते हैं जहाँ मोर
है वहाँ वल्लरी का बन्धन बन्धन क्या, वह तो आलिंगन
आलिंगन भी चिर-आलिंगन
बुझती पथिकों की जहाँ प्यास निद्रा लग जाती अनायास
है वहीं सदा इसका निवास

–गोपाल सिंह 'नेपाली'

शब्दार्थ

कानन	–	जंगल
वसुधा	–	पृथ्वी
तमाल	–	एक सदाबहार पेड़
कटील	–	एक काँटेदार झाड़ी
मृणाल	–	कमल की कोमल डंठल
मराल	–	हंस
पावस	–	वर्षा
मंजुल	–	सुन्दर, मनोहर
विह्वल	–	व्यग्र
विलोक	–	देखना
निर्झर	–	झरना
निर्झरिणी	–	नदी, सरिता
रजनी	–	रात
वल्लरी	–	लता
अस्ताचल	–	सूर्यास्त

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पीपल के पेड़ हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है ?
2. कैसा वातावरण मिलने पर बुलबुल पंछी गाने लगती है ?
3. वन्य प्रान्त के सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

पाठ से आगे

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

(क) ऊपर विस्तृत नभ नील-नील
नीचे वसुधा में नदी झील
जामुन, तमाल, इमली, करील
जल से ऊपर उठता मृणाल
फुनगी पर खिलता कमल लाल

(ख) है खड़े जहाँ पर शाल, बांस,
चौपाये चरते नरम घास
निर्झर, सरिता के आस-पास
रजनी भर रो-रोकर चकोर कर देता है रे रोज भोर
नाचा करते हैं जहाँ मोर।

व्याकरण

1. पाठ में आए योजक चिह्न वाले शब्दों को लिखिए जैसे- नील-नील।
2. पर्यायवाची शब्द लिखिए

तरु –
कानन –
सरिता –
वसुधा –
बयार –

गतिविधि

1. पीपल के वृक्ष का एक चित्र बनाइए, जिसपर विभिन्न प्रकार के पक्षी बैठे हों तथा पूरब दिशा में सूरज निकल रहा हो।
2. 'पेड़ों का महत्त्व'–इस विषय पर कक्षा में गोष्ठी का आयोजन कीजिए।
3. वनस्पतियों का प्रयोग विभिन्न रोगों के इलाज हेतु औषधि के रूप में किया जाता है। उन वनस्पतियों की सूची इलाज की जानेवाली बीमारियों के साथ बनाइए, जैसे–

तुलसी का पत्ता – खाँसी